बाधाओं का नाश कर ही जीवन में लक्ष्य सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। हमारे जीवन की बाधाएं भी प्रायः आसुरी शक्ति रक्तबीज की भांति ही होती हैं, एक को समाप्त करते हैं तो दूसरा जन्म ले लेता है।

हमारे जीवन के रक्तबीज दूसरों के कारण उत्पन्न होने वाली बाधाएं ही नहीं बल्कि स्वयं का आलस्य, असंयम, आत्म विश्वास की कमी भी है। इन रक्तबीजों को समाप्त कर ही लक्ष्य प्राप्ति संभव है, इनके मूल कारण को पहचानकर समाप्त करना आवश्यक है।

काली की उपासना का यही रहस्य है कि वे साधक के समस्त भय, संकोच और दुर्बलता को जड़ से समाप्त कर देती हैं, जिससे साधक हर बाधा को विघ्न नहीं, अपितु अपने संकल्प की परीक्षा मानकर आगे बढ़ता है।

महाविद्या महाकाली साधना

महाविद्या महाकाली साधना की सृष्टि स्वयं शिव ने की थी और यह साधना अत्यंत तेजस्वी होने के साथ-साथ अत्यधिक सरल और सहज है, कोई भी पुरुष-स्त्री, बालक-वृद्ध इसको सम्पन्न कर सकता है। इसमें किसी भी प्रकार की कोई रोक-टोक नहीं है।

महाकाली साधना से जीवन में बाधा, शत्रु, भय, इत्यादि तो समापन होते ही है साथ ही साथ साधक का जीवन -

- अष्ट पाशों से मुक्त हो जाता है और तंत्र के क्षेत्र में अत्यंत ऊंचाइयों को प्राप्त कर पाता है।
- जीवन स्वस्थ, निरोग और पूर्ण आयुष्य भोगता है।
- अज्ञान रूपी अंधकार मिट जाता है और उसमें एक नई चेतना एवं ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है।
- शत्रु रहते ही नहीं और अगर होते हैं, तो वे हमेशा उसके आगे विनीत भाव से रहते हैं, उसकी हर बात स्वीकार करते ही हैं।
- अटूट सम्पदा, धन, धान्य की स्थिति बन जाती है, समाज में मान, प्रतिष्ठा, पद की प्राप्ति होती है।

महाकाली साधना को महाकाली जयन्ती अथवा किसी भी कृष्ण पक्ष अष्टमी या अमावस्या की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है। साधक लाल अथवा काले वस्त्र धारण करके काले आसन पर बैठें। अपने समक्ष स्टील की थाली में काले तिल बिछाकर उस पर **'महाकाली यंत्र'** स्थापित करें। यंत्र का पूजन कर निम्न ध्यान मंत्र द्वारा भगवती काली का ध्यान करें -

कराल वदनां धोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजां
नमामि रक्त कालीं तां मुण्डमाला विभूषिताम्
घोररावां महारौद्रीं श्मशानालय वासिनीम्
बालार्क मण्डलाकारं लोचनत्रितयान्विताम्

ध्यान के पश्चात्काली का पूजन करें - कुंकुम, तथा अक्षत यंत्र पर निम्न मंत्रोच्चारण करते हुए चढ़ाएं -

आगच्छ वरदे देवि! दैत्यदर्पनिषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकर प्रिये।।

इसके पश्चात् **'महाकाली माला'** से निम्न मंत्र का 11 माला जप करें -

।। नमः आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा कालि कालिके हूं।।

यह 14 दिन की साधना है, 14 दिन नित्य साधना सम्पन्न करने के पश्चात् सम्पूर्ण साधना सामग्री को किसी नदी अथवा जल में विसर्जित कर दें।

जब साधक शुद्ध हृदय से कोई साधना करता है तो उसे उसके जीवन की अन्य प्रवृत्तियां बार-बार रोकती हैं लेकिन संकल्प में बहुत बड़ी शक्ति होती है उसके माध्यम से वह इस प्रवृत्ति को नष्ट कर आगे बढ़ता ही रहता है। शक्ति जो कि हमारे मन की सीमाएं और दोष हैं उन्हें तोड़ देती है जिससे जीवन के अवरोध समाप्त हो जाते हैं और एक शुद्ध मार्ग प्राप्त होता है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. 750/-